अध्याय–3

सार्वजनिक क्षेत्र

सेल संयंत्र में पिघलती गर्म धातु

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड

(सहायक हटाकर)

1. सामान्य

1.1 स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल), इंडिया कम्पनी एक्ट, 1956 के अंतर्गत पंजीकृत है और यह भारत सरकार का एक उद्यम है। यह भिलाई (छत्तीसगढ़), बोकारो (झारखंड), दुर्गापुर (पं0 बंगाल) एवं राउरकेला (उड़ीसा) में स्थित चार एकीकृत इस्पात संयंत्रों का प्रचालन एवं प्रबंधन करती है। इसके अतिरिक्त, इण्डियन ऑयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड, जो सेल के पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी है, के स्वामित्व में बर्नपुर में इसका एक और एकीकृत इस्पात संयंत्र है।

1.2 सेल के दुर्गापुर (पं. बंगाल), सेलम (तमिलनाडु) और भद्रावती (कर्नाटक) में स्थित विशेष और मिश्र इस्पात तथा फैरो मिश्र के तीन इस्पात कारखाने भी हैं। इसके अतिरिक्त चंद्रपुर स्थित संयंत्र महाराष्ट्र इलेक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड जो फैरो मिश्र का उत्पाद करने वाला संयंत्र है, भी सेल की सहायक कम्पनी है। इस्को की सहायक कम्पनी इस्को–उज्जैन पाइप एंड फाउण्ड्री कम्पनी लिमिटेड, अपने उज्जैन (म. प्र.) स्थित कारखाने में कास्ट ऑयरन स्पन पाइपों का उत्पादन करती थी, का परिसमापन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त सेल की सात केन्द्रीय इकाइयां हैं। लोहा और इस्पात अनुसंधान एवं विकास केन्द्र (आर.डी.सी.आई.एस), इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र (सी.ई.टी.) प्रबंध प्रशिक्षण संस्थान (एम.टी. आई.) रांची में स्थित है। धनबाद में केन्द्रीय कोयला आपूर्ति संगठन, कोलकाता में कच्चा माल प्रभाग, ग्रोथ प्रभाग तथा पर्यावरण प्रबंधन हैं। ये सभी कोलकाता में स्थित हैं। सेल का परामर्श प्रभाग (सेलकॉन) दिल्ली में कार्य करता है। सेल के संयंत्रों में उत्पादित मूल का विपणन कार्य कोलकाता स्थित केन्द्रीय विपणन संगठन करता है जिसके देशभर में विपणन केन्द्र हैं। कारोबार पुरर्संरचना के भाग के रूप में दिनांक 9 फरवरी 1999 को एक सहायक कम्पनी के रूप में भिलाई ऑक्सीजन लिमिटेड (बीओएल) को निगमित किया गया है।

2. पूंजीगत ढ़ाँचा

2.1 सेल की प्राधिकृत पूंजी 5000 करोड़ रूपए है। 31 मार्च 2004 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की चुकता पूंजी 4130.40 करोड़ रूपए थी, जिसमें 85.82 प्रतिशत भारत सरकार की तथा शेष 14.18 प्रतिशत वित्तीय संस्थाओं/जी.डी.आर. धारकों/बैंकों/कर्मचारियों/व्यक्तियों आदि की थी। कंपनी का उत्पदान एवं वित्तीय निष्पादन निचे दिया गया है।

उत्पादन निष्पादन

वस्तुएं	2002-2003 (वास्तविक)	2003-2004 (वास्तविक)	2004-2005 (दिस.'2004 तक)		
			लक्ष्य	वास्तविक	प्रतिपूर्ति प्रतिशत
उत्पादन (मिलियन टन)					
गर्म धातु	12.080 *(95%)	12.75 *(101%)	9.01	8.93	99
कच्चा इस्पात	11.087 *(96%)	11.83 *(96%)	8.50	8.59	101
बिक्री योग्य इस्पात	10.086 *(95%)	10.73 *(101%)	7.71	7.70	100

* उपयोग क्षमता प्रतिशत में

वित्तीय निष्पादन

वस्तुएं	2002-2003 (वास्तविक)	2003-2004 (वास्तविक)	2004-2005 (दिस.'2004 तक)
वित्तीय (करोड़ रूपए में)			
बिक्री	19207	24178	21578
सकल लाभ	2165	4650	7030
कर पूर्व लाभ	(-)316	2628	5739

दुर्गापुर इस्पात संयंत्र

4. कच्चा माल

वर्ष 2003–04 के दौरान सेल के कैप्टिव (अधिकार क्षेत्र वाले खनन क्षेत्र) माईन्स द्वारा कुल उत्पादन एवं वितरण क्रमशः 20.95 मिलियन टन एवं 21.11 मिलीयन टन रहा। गत वर्ष से यह उत्पादन में 15 प्रतिशत की एवं वितरण में 13 प्रतिशत की अभिवृद्धि थी। अप्रैल से नवम्बर 2004 के दरम्यान लौह अयस्क एवं फ्लक्स का उत्पादन क्रमशः 12.74 मिलीयन टन (लगभग) एवं 1.53 मिलीयन टन प्रोविजनल (अनंतिम) हुआ।

5. मानव शक्ति

वर्ष	कार्यकारी	गैर कार्यकारी	कुल
2003–04	14870	117040	131910
2004–05	14700	114900	129600
(31/12/2004 तक)			

सहायक प्रशाखा कम्पनियां

(ए) इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड

इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (इस्को) का बर्नपुर में एक एकीकृत कारखाना, गुआ और मोहरपुर में निजी लौह अयस्क की खानें, चासनाला, जीतपुर, रामनगर में कोयले की निजी खानें, चासनाला में कोयला धोवनशा और कल्टी में एक विशाल फाउंड्री कॉम्प्लेक्स है, जिसका यह प्रचालन करती है। केन्द्र सरकार द्वारा इस्को के प्रबंधन का अधिग्रहण 14 जुलाई 1972 को किया गया था। प्राईवेट पार्टियों के धारित शेयरों को 17 जुलाई 1976 को केन्द्र सरकार द्वारा खरीद लिया गया। सरकारी वित्तीय संस्थाओं द्वारा धारित शेयरों को भी केन्द्र सरकार द्वारा खरीद लिया गया और बाद में ये सभी शेयर सेल को अंतरित कर दिये गए। 30 मार्च 1979 को इस्को पूर्ण रूप से सेल के स्वामित्व में उसकी सहायक कम्पनी बन गई।

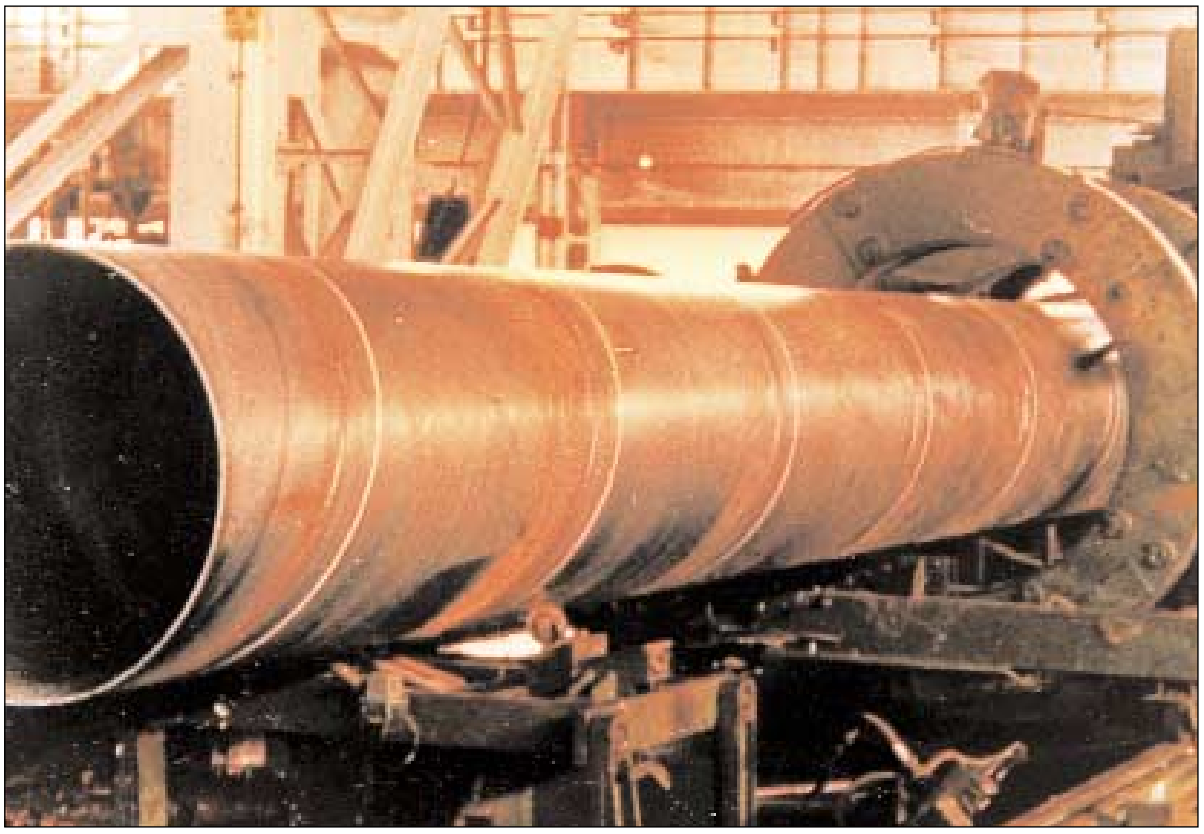

राउरकेला संयंत्र में सर्पाकार वेल्डेड पाइप

1. उत्पादन निष्पादन

वर्ष 2003–04 एवं अप्रैल से दिस. 2004 तक इस्पात संयंत्रों का उत्पादन निष्पादन नीचे दिया जा रहा है–

	2003-04			अप्रैल–दिसम्बर, 2004		
	योजना	वास्तविक	प्रतिपूर्ति (प्रतिशत)	योजना	वास्तविक	प्रतिपूर्ति (प्रतिशत)
गर्म धातु	810.00	641.5	79.2	622	474.7	76.3
कच्चा इस्पात	423.00	301.0	71.2	381	267.8	70.3
कच्चा लोहा	335.00	222.3	66.4	185	120.3	65.03
बिक्री योग्य इस्पात	352.00	257.6	73.2	311	209.2	67.3

सेल का भिलाई इस्पात संयंत्र स्थित रेल एण्ड स्ट्रड मिल

2. वित्तीय निष्पादन

31 मार्च, 2004 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की प्राधिकृत एवं प्रदत्त पूंजी क्रमशः 550 करोड़ रूपए और 387.66 करोड़ रूपए रही।

2003–04 के दौरान कम्पनी ने 1051.26 करोड़ रूपए का बिक्री कारोबार किया और 27.09 करोड़ रूपए का निबल लाभ अर्जित किया। जबकि वित्तीय वर्ष 2002–03 में 182.23 करोड़ का घाटा हुआ। नवम्बर 2004 तक के वास्तविक एवं दिस. 2004 के लिए प्रक्षेपित आधार पर यह अपेक्षित है कि अप्रैल से दिस. 2004 तक कम्पनी 1030 करोड़ रूपए का बिक्री कारोबार करेगी 142 करोड़ रूपए का निबल लाभ अर्जित करेगी।

(बी) महाराष्ट्र इलैक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड

महाराष्ट्र इलेक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड चंद्रपुर महाराष्ट्र में स्थित है और फेरोमैगनीज एवं सिलिको मैगनीज का बड़ा उत्पादक है। यह सेल के इस्पात संयंत्रों में अपने निजी उपयोग के लिए फेरोमैगनीज एवं सिलिक मैगनीज का प्रमुख उत्पादक है।

1. वित्तीय निष्पादन

31.3.2004 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की प्राधिकृत एवं प्रदत्त शेयर पूंजी क्रमशः 30 करोड़ रूपए एवं 24 करोड़ रूपए थी। सेल की धारिता प्रदत्त पूंजी का 99.12 प्रतिशत है। वर्ष 2003–04 के दौरान पिछले वर्ष के 18906 करोड़ रूपए की तुलना में कम्पनी ने 152.98 करोड़ रूपए का कारोबार किया। कम्पनी ने समग्र परिवर्तत करते हुए निष्पादन किया है और 6.30 करोड़ रूपए का निवल लाभ अर्जित किया है जबकि 2002–03 क दौरान 1.12 करोड़ रूपए का निवल लाभ अर्जित किया गया था। अप्रैल से दिस. 2004 तक कम्पनी का तत्कालिक कारोबार एवं निवल लाभ क्रमशः 199.2 करोड़ रूपए एवं 54.41 करोड़ रूपए रहा।

2. उत्पादन निष्पादन

फेरो एलॉइज़ कम्पनी का उत्पादन अलग ग्रेड में नीचे दिया गया है।

(एमटी)

माल	2002-2003	2003-2004	अप्रैल–दिसम्बर 2004 (अनंतिम)
हाई कार्बन फैरो मैंगनीज़	57849	24531	50139
सिलिको मैंगनीज़	35318	35670	23017
मीडियम कार्बन फैरो मैंगनीज़	1939	1443	1574

(सी) भिलाई ऑक्सीजन लिमिटेड

इस कम्पनी की स्थापना सभी प्रकार के ऑक्सीजन संयंत्रों की अधिप्राप्ति करने, प्रवर्तित करने, विकसित करने, स्थापित करने, स्वामित्व रखने, प्रचलित करने और अनुरक्षण करने तथा इस्पात संयंत्रों अन्य एजेंसियों और ग्राहकों आदि को ऑक्सीजन नाइट्रोजन, एसीटीलिन, हाइड्रोजन और अन्य औद्योगिक गैसों की क्षमता, विनिर्माण, खरीद ओर सप्लाई करने के उद्देश्य से की गई थी। सेल की पुनर्संरचना के अंतर्गत भिलाई इस्पात संयंत्र के ऑक्सीजन संयंत्र 2 से संबंधित परिसंपत्तियों को कम्पनी को अधिग्रहण करना था। पुनर्संरचना प्रक्रिया में देर होने के कारण अब तक कम्पनी को कोई सम्पत्ति हस्तांतरित नहीं की गई है। इस प्रकार इस अवधि के दौरान कम्पनी द्वारा कोई वाणिज्यिक गतिविधि नहीं की गई है। तथापि कम्पनी विविध मदों पर 11,280 रूपए खर्च किए। कोई आय न होने के कारण इस अवधि में 11,280 रूपए की ही हानि हुई।

सेल के साथ नीतिपरक साझेदार बनने हेतु इच्छुक कम्पनियों से सेल ने 'बीड' आमंत्रित किए हैं। सूचीबद्ध पक्षों के साथ विस्तृत विचार विमर्श किया गया जो अंततः असफल रहा। कम्पनी के लिए एसएपी (स्टेटजिक एलांयस पार्टनर) अभिज्ञात एवं चयनित करने के लिए सेल ने नए सिरे से प्रयत्न किए वह भी असफल रहा। बार–2 प्रयास करने के बावजूद उपयुक्त प्रस्ताव प्राप्त नहीं होने के कारण सेल ने ऑक्सीजन संयंत्र–2 के विनिवेश प्रक्रिया को बंद करने का निर्णय लिया है।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र)

परिचय

विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र प्रथम तटीय अवस्थित एकीकृत इस्पात संयंत्र विशाखापत्तनम, आंध्रप्रदेश में है। संयंत्र अगस्त 1992 में 3 मिलियन टन वार्षिक तरल इस्पात की क्षमता से कमीशंड हुआ। डिजाइन और इंजीनियरिंग में अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उच्चतम तकनॉलाजी जिसमें भारी ऊर्जा बचत और प्रदूषण नियंत्रण उपाय किए गए हैं, के आधार पर बनाया गया। वीएसपी के शानदार ले–आउट जो संयंत्र की क्षमता विस्तार को 10 मिलियन टन उत्पादन विस्तार की सुविधा प्रदान करता है। अपने एकीकृत उत्पादन के वर्ष से ही वीएसपी ने घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद के साथ धाक जमा लिया। कम्पनी को सभी तीन अंतर्राष्ट्रीय स्टेंडर्ड प्रमाण पत्र जो ISO 9001:2000, ISO 14001:1996 और OHSAS 18001:1999 प्राप्त हो चुके हैं। RINL, VSP एक अच्छे कारपोरेट सिटिजन के रूप में उभरा है और क्षेत्र के विकास में अपना अंशदान किया है।

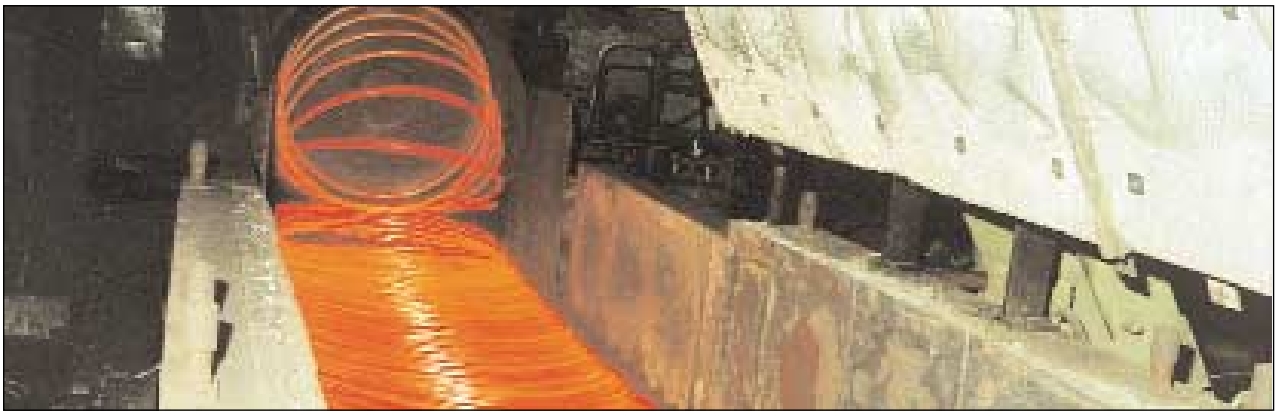

विशाखापत्तनम इस्पात संयंत्र वायर रॉड मिल

कम्पनी का उत्पादन एवं वित्तीय निष्पादन नीचे दिया गया है:

उत्पादन निष्पादन

वस्तुएं	2002-2003 (वास्तविक)	2003-2004 (वास्तविक)	2004-2005 (दिस.'2004 तक)		
			लक्ष्य	वास्तविक	प्रतिपूर्ति (प्रतिशत)
उत्पादन (मिलियन टन)					
गर्म धातु	3.942 *(115%)	4.055 *(119%)	2.965	2.861	96
तरल इस्पात	3.357 *(112%)	3.508 *(117%)	2.467	2.635	107
बिक्री योग्य इस्पात	3.056 *(115%)	3.169 *(119%)	2.201	2.314	105

* उपयोग क्षमता प्रतिशत में

वित्तीय निष्पादन

वस्तुएं	2002-2003 (वास्तविक)	2003-2004 (वास्तविक)	2004-2005 (दिस.'2004 तक)
वित्तीय (करोड़ रूपए में)			
बिक्री	5059	6169	5475.2
सकल लाभ	1098	2072.7	1919.7
टैक्स से पहले लाभ	1098	2072.7	1919.7

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड

सामान्य

15 नवंबर 1958 को स्थापित, भारत सरकार के अंतर्गत, नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड देश के खनिज स्त्रोतों के विकास एवं दोहन (कोयला, तेल, नेचुरल गैस, एटमी खनिज के अलावा) में संलग्न हैं। वर्तमान में इसकी गतिविधियाँ लौह अयस्क, हीरे एवं सिलिका चूर्ण के खनन पर संक्रेंद्रित हैं। एनएमडीसी बैलाकिला (छत्तीसगढ़) और दौणिमले (कर्नाटक) स्थित देश में सबसे बड़ी यंत्रीकृत खानों का प्रचालन करती है। सिलिका सैंड प्रोजेक्ट लालपुर, इलाहाबाद में और हीरा खान पन्ना (मध्य प्रदेश) में स्थित है। एनएमडीसी की सभी लौह अयस्क उत्पादन इकाइयों और आर एण्ड डी सेंटर को आईएसओ 9000 प्रमाण पत्र प्राप्त हैं। आईएसओ 14000 प्रमाणपत्र प्राप्त होने की दिशा में है।

लौह अयस्क

निर्यात

एनएमडीसी द्वारा उत्पादित लौह अयस्क का निर्यात खनिज एवं धातु व्यापार निगम (एम.एम.टी.सी.) के माध्यम से किया जाता है। लौह अयस्क का निर्यात मुख्य रूप से जापान, द. कोरिया और चीन को किया जाता है। वर्ष 2004–05 (दिस. तक) में एनएमडीसी ने लगभग 739.64 करोड़ रूपए मूल्य का 5.28 मिलियन टन (0.53 MT प्रत्यक्ष निर्यात मिलाकर) लौह अयस्क निर्यात किया।

घरेलू बिक्री

2004–05 (दिस. तक) में लौह अयस्क की घरेलू बिक्री 11.30 मिलियन टन थी।

पूंजीगत ढांचा

कम्पनी की प्राधिकृत पूंजी 150 करोड़ रूपए है। प्रदत्त साम्या शेयर पूंजी 132.16 करोड़ रूपए थी। भारत सरकार के ऋण की कोई राशि बकाया नहीं है।

कम्पनी का उत्पादन एवं वित्तीय निष्पादन नीचे दिया गया है:

उत्पादन निष्पादन					
वस्तुएं	2002-2003 (वास्तविक)	2003-2004 (वास्तविक)	2004-2005 (दिस.'2004 तक)		
			लक्ष्य	(वास्तविक)	प्रतिपूर्ति (प्रतिशत)
उत्पादन (मिलियन टन)					
आयरन ओर	16.97	17.96	13.85	14.10	101.8
हीरा (कैरेट में)	84348	71163	55344	53401	96.49

वित्तीय निष्पादन			
वस्तुएं	2002-2003 (वास्तविक)	2003-2004 (वास्तविक)	2004-2005 (दिस.'2004 तक)
वित्तीय (करोड़ में)			
बिक्री	1293.43	1532.70	1513.92
सकल लाभ	462.72	672.95	809.56
टैक्स से पहले लाभ	420.18	616.02	753.93

मांडवी पैलेट्स लिमिटेड

मांडवी पैलेट्स लिमिटेड (एमपीएल), गोवा नेशनल मिनरल डेवलपमेंट लिमिटेड और निजी क्षेत्र की एक कम्पनी मैसर्स चौगुले एंड कम्पनी के जरिए भारत सरकार द्वारा चालू की गई संयुक्त क्षेत्र की एक कम्पनी है। गोवा में कम्पनी का 1.8 मिलियन टन वार्षिक क्षमता का अपना पैलेट संयंत्र है।

एनएमडीसी ने 10 रूपए प्रति फेस वैल्यू वाले 60 लाख शेयर अधिग्रहीत कर मांडवी पैलेट्स लिमिटेड में 600 लाख रूपए का इक्विटी निवेश किया है।

जबकि कम्पनी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रही है। लाभप्रदता में सुधार करने हेतू एमपीएल ने एक पुनर्संरचना योजना तैयार की है जिसमें अन्य बातों के साथ–2 एनएमडीसी द्वारा और निवेश करना शामिल है और निवेश नहीं किए जाने की स्थिति में मूल समूह अर्थात मैसर्स चौगुले एण्ड कम्पनी लि0 (सीसीएल) कम्पनी की सम्पूर्ण शेयर धारिता का अधिग्रहण करने की पेशकश करेगी। एम/एससीसीएल ने एनएमडीसी द्वारा धारित कुल रकम एवं शेयर का भुगतान कर दिया है जो एम/एसएमपीएल को हस्तगत हो गए हैं।

जे0 एण्ड के0 मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड

जम्मू और कश्मीर राज्य में विभिन्न खनिज उत्पादों का विकास करने के लिए एनडीएमसी की एक सहायक कम्पनी 'जम्मू एण्ड कश्मीर मिनरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड' (जे एण्ड के एमडीसी) 19.5.1989 को निगमित की गई। जे. एण्ड के मिनरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड के 74 प्रतिशत शेयर एनएमडीसी के पास हैं और शेष 26 प्रतिशत शेयर राज्य सरकार के सरकारी क्षेत्र के उपक्रम जे. एण्ड के मिनरल लिमिटेड के पास हैं। 30,000 टन वार्षिक क्षमता के डेड बर्न्ट मैग्नेसाइट (डीबीएम) संयंत्र के लिए भारत सरकार द्वारा नवम्बर, 1992 को मंजूरी दी गई थी। वर्ष 1993–94 में डीबीएम पर सीमा शुल्क में कमी और इसके बाद अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में गिरावट के कारण परियोजना की व्यवहार्यता बुरी तरह से प्रभावित हुई। इसलिए परियोजना का निर्माण कार्य प्रारंभ न हो पाया।

कम्पनी के निदेशक मंडल ने 23 मई 2002 को हुई अपनी 57वीं बैठक में इस कम्पनी के सभी विकासात्मक कार्यकलापों और कच्चे मैगनेसाइट अथवा डीबीएम बिक्री के मंद परिणाम को देखते हुए इसे बंद करने का निर्णय लिया। यह भी निर्णय लिया गया कि इसे बंद करने के मामले को जेकेएमडीसी और जेकेएलएम के बोर्डो को संदर्भित कर दिया जाए। एनडीएमसी के बोर्ड ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और इच्छा व्यक्त की है कि इसे अनुमोदन के लिए इस्पात मंत्रालय को भेज दिया जाए। तथापि जम्मू और कश्मीर सरकार और जेकेएमएल बोर्ड के निर्णय का अभी इंतजार है।

एमएसटीडी लिमिटेड

1) भूमिका

एमएसटीडी लिमिटेड (जो पहले मेटल स्क्रैप हेड कारपोरेशन लिमिटेड के नाम से जानी जाती थी) को 9 सितम्बर, 1964 को कम्पनी 1956 के तहत निगमित किया गया था। कम्पनी की प्रस्थिति फरवरी 1974 में स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) की प्रशाखा के रूप में बदल गई।

वर्ष 1982–83 में यह सेल के शेयरों को भारत सरकार के राष्ट्रपति को हस्तांतरित कर भारत सरकार की कम्पनी के रूप में बदल गई। इस समय यह कम्पनी सेल/आर.आई.एन.एल आदि के एकीकृत इस्पात संयंत्रों में बनने वाले फैरस तथा गैट फैरस स्क्रैप का निपटान करती है तथा अन्य प्राइवेट ट्रेडरों के समान ही स्पर्धा में सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों और सरकारी विभागों से प्राप्त स्क्रैप, कोक, परिसज्जित इस्पात और पेट्रोलियम उत्पादों का आयात भी करती है।

2) पूंजीगत संरचना

31.03.2004 के अनुसार कम्पनी की प्राधिकृत पूंजी 5 करोड़ रूपए एवं प्रदत्त पूंजी 2.20 करोड़ रूपए थी, जिसमें से लगभग 90 प्रतिशत भारत के राष्ट्रपति के पास और शेष 10 प्रतिशत स्टील फर्नेस एसोसिएशन ऑफ इंडिया, ऑयरन एण्ड स्टील स्क्रैप एसोसिएशन ऑफ इंडिया तथा अन्य के पास हैं। प्रदत्त पूंजी 2. 20 करोड़ रूपए है, जिसमें वर्ष 1993–94 में 1:1 अनुपात में जारी किए गए बोनस शेयर भी शामिल हैं।

3) यूनिट का क्षेत्र

कम्पनी का अनुबंधित एवम् स्थापित कार्यालय क्षेत्र कलकत्ता में स्थित है एवं इसका चार क्षेत्रीय कार्यालय कलकत्ता, दिल्ली, चेन्नई एवं मुम्बई तीन शाखा कार्यालय विशाखापत्तनम, बैंगलोर एवम् बडोदरा एवम् पाँच निवासी कार्यालय दुर्गापुर, भोपाल, रूड़की हजीरा एवम् हिची में है।

4) कार्यकलाप

कम्पनी के कार्यकलापों के दो प्रमुख क्षेत्र हैं विक्रय एजेंसी एवम् विपणन।

(अ) विक्रय एजेंसी

कम्पनी एकीकृत इस्पात संयंत्रों से उत्पन्न होने वाले लौह स्क्रैप तथा अन्य गौण स्क्रैप का निपटान करती है तथा अन्य सरकारी क्षेत्रों के उद्यमों एवं रक्षा मंत्रालयों सहित सरकारी विभागों के स्क्रैप तथा अधिशेष भंडार आदि का भी निपटान करती है।

(ब) विपणन

कम्पनी आर्डर देने एवं लेने के आधार पर बड़े औद्योगिक घरानों द्वारा अपेक्षित आदान सामग्री का आयात करती है। आयात की जाने वाली मदों में पेट्रोलियम उत्पाद, एलएएम कोक, डीआर पैलेट्स, एच क्वायलें, गलन स्क्रैप आदि शामिल हैं। यह भारत में मदों की भी खरीद फरोख्त करती है।

5. भौतिक एवम् वित्तीय निष्पादन

वर्ष 2004–05 (दिस. 2004 तक) एवम् पिछले दो वर्षों में वास्तविक एवम् वित्तीय निष्पादन नीचे दिया जा रहा है।

(करोड़ रूपए में)

		2002-03	2003-04	2004-05 (दिसंबर तक)
क.	**वास्तविक**			
(i)	विक्रय एजेंसी/घरेलू	628.00	738	614
ii)	विपणन	2045.00	3427	3954
iii)	कारोबार की कुल मात्रा	2673.00	4165	4568
ख.	**वित्तीय**			
(i)	कारोबार	2079.33	3344.02	3823
(ii)	प्रचालन लाभ (ब्याज, मूल्य ह्रास और अन्य प्रावधान से पूर्व)	17.06	34.11	40.35
(iii)	ब्याज, मूल्य ह्रास और प्रावधान	0.32	0.42	0.41
(iv)	कर पूर्व लाभ	16.74	33.69	39.94
(v)	लाभांश	83%	171%	-

फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

भूमिका

फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड (एफएसएनएल) पूर्ण रूप से एमएसटीसी लिमिटेड की सहायक की सहायक कम्पनी है जिसकी प्रदत्त पूंजी 200 लाख रूपए है।

कार्यकलाप एवं उद्देश्य

यह कम्पनी राउरकेला, बर्नपुर, भिलाई, बोकारो, विशाखापत्तनम, दुर्गापुर, डोलवी, टुबटी में स्थित आठ इस्पात संयंत्रों में बनने वाले धूमिमल और कचरे से स्क्रैप प्राप्ति और उसे संसोधित करने का कार्य करती है।
प्राप्त स्क्रैप को इस्पात संयंत्रों के पास पुनश्चक्रण/निपटान के लिए लौटा दिया जाता है। कम्पनी को स्क्रैप की श्रेणी के आधार पर विभिन्न गुणवत्ता वाली दरों के आधार पर संसाधन प्रभार प्राप्त होता है। स्क्रैप का सृजन इस्पात तैयार करने में और रालिंग मिलों में भी होता है। इसके अतिरिक्त कम्पनी स्लैबों की स्कर्फिंग, बीओएफ स्लैग का संभाल आदि कार्य भी करती है।

यूनिट का क्षेत्र

कम्पनी का मुख्य कार्यालय भिलाई में है एवम् कम्पनी की आठ क्षेत्रीय यूनिट– भिलाई, बर्नपुर, रूड़की, बोकारो, विशाखापत्तनम दुर्गापुर, डोल्वी एवं दुबरी में स्थित है।

भौतिक एवम् वित्तीय निष्पादन

भौतिक निष्पादन

एफएसएनएल का पिछले दो वर्षों और वर्ष 2004–05 दिस. तक का उत्पादन निष्पादन नीचे दिया जा रहा है–

वस्तु	02-03	03-04	2004-05 (31/12/04 तक)
भौतिक			
पुनर्प्राप्ति (लाख मिलियन टन)	16.29	19.36	15.54
उत्पादन का बाजार मूल्य (करोड़ रूपए में)	716.77	851.84	683.76
वित्तीय			
कुल कारोबार, (सेवा शुल्क प्राप्त)			
अन्य आय सहित	7904.76	8816.34	6466.61
कुल योग			
क्षरण एवं ब्याज से पूर्व	1549.88	1671.41	1133.89
क्षरण एवं ब्याज	731.46	840.40	675.00
पीबीटी	818.42	831.01	458.89

मैंगनीज़ ओर (इंडिया) लिमिटेड

भूमिका

मैगनीज़ ओर (इंडिया) लिमिटेड (मॉयल) की स्थापना 1962 में की गई थी। यह भारत में मैगनीज़ अयस्क का उत्पादन करने वाली सबसे बड़ी कम्पनी है। स्थापना के समय इसका 49 प्रतिशत शेयर सेंट्रल प्रोविंस मैनेजमेंट ओर कम्पनी लिमिटेड (सीपीएमओ) एवं बचा 51 प्रतिशत शेयर समान अनुपात में भारत सरकार मध्य प्रदेश राज्य सरकार एवं महाराष्ट्र के पास था। इसके बाद वर्ष 1977 में सीपीएमओ के मॉयल में जो शेयर थे वे भारत सरकार द्वारा हस्तगत कर लिए गए एवं मॉयल अक्टू 1977 से पूर्णतः सरकारी कम्पनी हो गई। 31 मार्च 2004 की स्थिति के अनुसार मॉयल में भारत सरकार के 81.57 प्रतिशत शेयर महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश सरकार के क्रमशः 9.62 प्रतिशत एवं 8.81 प्रतिशत शेयर थे।

मॉयल निम्नलिखित विभिन्न शेड़ों के मैगनीज़ अयस्कों का उत्पादन और बिक्री का कार्य करती है:

- फैरो मैगनीज़ के उत्पादन के लिए उच्च श्रेणी का अयस्क
- सिलिको मैगनीज़ के उत्पादन के लिए मध्यम श्रेणी का अयस्क
- तात धातु के उत्पादन के लिए अपेक्षित धमन भट्टी ग्रेड के अयस्क
- डायक्साइड़ अयस्क जो शुष्क बैटरी सेल बनाने के काम आता है।

पूंजीगत ढ़ांचा

31 मार्च 2004 के स्थिति अनुसार कम्पनी की अधिकृत पूंजी 30 करोड़ रूपए और प्रदत्त पूंजी 15.33 करोड़ रूपए है।

उत्पादन एवं वित्तीय परिणाम

वर्ष 2002–03, 2003–04 एवं 2004–05 के दौरान (अप्रैल से दिसम्बर 2004) में वास्तविक एवं वित्तीय निष्पादन नीचे दिया जा रहा है–

वस्तु		2002-2003	2003-04	2004-2005 (अनंतिम) (अप्रैल–दिसंबर 2004)
1.	उत्पादन			
	(क) मैंगनीज ओर (हजार टन)	714.00	799.00	674.28
	(ख) ईएमडी (टन)	930.00	975.00	812
	(स) फैरो मैंगनीज (टन)	5996.00	10899.00	7701
2.	कारोबार (करोड़ रूपए)	177.88	228.74	234.83
3.	लाभ, कर से पूर्व (करोड़ रूपए)	27.83	45.29	85.25

कुद्रेमुख लौह अयस्क कम्पनी लि.

1.1 कुद्रेमुख लौह अयस्क कम्पनी लि. देश में सबसे बड़ी 100 प्रतिशत EOU, ISO 9001:2000, ISO 14001 और गोल्डन स्यर ट्रेडिंग कम्पनी है जो ईरान के दीर्घावधि जरूरतों को पूरा करने के लिए अप्रैल 1976 में स्थापित की गई थी। एक लौह अयस्क संकेन्द्रित संयंत्र 7.5 मिलियन टन क्षमता युक्त कुद्रेमुख में स्थापित की गई थी। यद्यपि ईरान ने बाद में 255 मिलियन डॉलर ऋण देने के बाद बाकी का ऋण रोक दिया था। लेकिन परियोजना भारत सरकार के द्वारा वित्त मुहैया कराने पर यथासमय पूरी हो गई।

1.2 जबकि परियोजना यथा समय पूरी हो गई, आगे चलकर ईरान में राजनीतिक घटनाओं के कारण इसने कोई उत्पादन की मात्रा को नहीं लिया। विविध उपाय करके सरकार ने मई 1981 में सरकार ने मंगलोर में एक 3 मिलियन टन क्षमता युक्त पेलेट प्लांट निर्माण को मंजूरी दी। पेलेट प्लांट कीक्षमता विभिन्न बदलाव/परिवर्तन के साथ बढ़ाकर 3.5 मिलियन टन कर दी गई है। संयंत्र में व्यावसायिक उत्पादन 1987 में प्रारम्भ हुआ और यह ब्लास्ट फर्नेस ग्रेड पेलेट्स चीन, ताइवान, इंडानेशिया ओर घरेलू इकाईयां यथा विक्रम इस्पात और इस्पात इंडस्ट्रीज को निर्यात कर रहा है। लौह अयस्क सेकेन्द्रण ईरान, जापान और चीन को निर्यातित है। उत्पादन एवं वित्तीय निष्पादन नीचे दिया जा रहा है–

उत्पादन निष्पादन					
वस्तुएं	2002-2003 (वास्तविक)	2003-2004 (वास्तविक)	2004-2005 (दिस.'2004 तक)		
			लक्ष्य	वास्तविक	प्रतिपूर्ति (प्रतिशत)
उत्पादन (गुणवत्ता ड्राई मीट्रिक टन)					
ध्यानपूर्वक	5532	5090	2825	3300	115
पैलेट्स	3450	3671	2590	2852	110

वित्तीय निष्पादन			
वस्तुएं	2002-2003 (वास्तविक)	2003-2004 (वास्तविक)	2004-2005 (दिस.'2004 तक)
वित्तीय (करोड़ में)			
बिक्री	727.14	1029.38	1256
शुद्ध लाभ	173.03	459.45	779.32
टैक्स से पहले लाभ	109.76	407.74	666

बर्ड ग्रुप की कम्पनियाँ

भूमिका

बर्ड एण्ड कम्पनी लिमिटेड के उपक्रमों का 1980 में राष्ट्रीयकरण किए जाने के परिणामस्वरूप शेयरधारिता पद्धति के आधार पर निम्नलिखित सात कम्पनियां इस्पात मंत्रालय भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आ गईं:

(क) उड़ीसा मिनरल डेवलपमेंट कम्पनी लिमिटेड (ओ.एम.डी.सी.)
(ख) बिसरा स्टोन लाइन कम्पनी लिमिटेड (बी.एस.एल.सी.)
(ग) करनपुरा डेवलपमेंट कम्पनी लिमिटेड (के.डी.सी.एल.)
(घ) स्कॉट एण्ड सेक्सबाई लिमिटेड (एस.एस.एल.)
(ड.) ईस्टर्न इन्वेस्टमेंट लिमिटेड (ई.आई.एल.)
(च) बुराकर कोल कम्पनी लिमिटेड (बुराकर)
(छ) बोरिया कोल कम्पनी लिमिटेड (बोरिया)

कम्पनियों की स्थिति नीचे दर्शाई गई है :–

(क) बुराकर और बोरिया पहले कोयला कम्पनियां थीं। कोयला खानों के राष्ट्रीयकरण के बाद ये अप्रचलनात्मक बन गई। तथापि ये कम्पनियां केवल आयकर और अन्य अनिवार्य मामलों के निपटान हेतू कार्य कर रही है।

(ख) ईआईएल एक निवेश कम्पनी है। बर्ड ग्रुप के अंतर्गत प्रचालनरत कम्पनियों के इक्वीटी शेयरों में ईआईएल का एक प्रमुख हिस्सा है।

(ग) ओ.एम.डी.सी, बी.एस.एल,सी, के. डी.सी.एल एवं एस.एस.एल इस ग्रुप के अंतर्गत खनन कम्पनियां हैं।

ईएमडी संयंत्र डोंगरी बुजुर्ग खदान का इलेक्ट्रोप्लेटिंग सेक्शन

राष्ट्रीयकरण के समय कम्पनियों की स्थिति

जब बर्ड ग्रुप की कम्पनियां, इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आईं, उस समय सभी कम्पनियां वित्तीय रूप से रूग्ण थी और उनके ऊपर विभिन्न समस्याओं के कारण भारी बोझ था। भारत सरकार से वित्तीय सहायता मिलने से ये समस्याएं जो मुख्यतया भाटी श्रम शक्ति, कार्यपूंजी के ह्रास तथा बकाया देनदारियां थीं, को काफी हद तक निपटाया जा सका।

पृथक–पृथक प्रचालनरत कम्पनियों का कार्य निष्पादन

उड़ीसा मिनरल डेवलपमेंट कम्पनी लिमिटेड (ओएमडीसी)

खानों की क्षेत्र स्थिति, कार्यकलाप एवम् पूंजी संरचना

कम्पनी की खानें क्योंझर जिले के बारबिल के आसपास स्थित हैं। इसके कार्यकलाप लौह अयस्क और मैगनीज़ अयस्क के खनन औ विपणन से संबंधित हैं। इसकी प्राधिकृत एवम् प्रदत्त पूंजी 60 लाख रूपए है।

निष्पादन

इस्पात बाजार में उछाल की वजह से, लोहा एवम् इस्पात की मांगों में वृद्धि आई है। अधिक उत्पादन एवम् उचित वास्तविकरण की वजह से कम्पनी वर्ष 2002–03 में समग्र परिवर्तन के चरण में पहुंच गई। कम्पनी का निष्पादन नीचे दिया गया है–

(रूपए लाख में)

	2002-03	2003-04	2004-05 (अनंतिम) (अप्रैल–दिसंबर 04)
उत्पादन ('000 एमटी)	1573	3130	2738
विक्रय	4786	22382	22286
सरकार के ऋण पर ब्याज एवं क्षरण से पहले कुल लाभ	1309	15849	18940
शुद्ध लाभ/हानि	314	10424	11957

विविधीकरण

कम्पनी ने विविधीकरण परियोजनाओं को शुरू किया है। स्पंज लोहे की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए इसने ठाकुरानी में 100 टीपीए का स्पंज लोहा संयंत्र चालू किया है। व्यवसायिक उत्पादन जून 2004 में शुरू हुआ।

बिरसा स्टोन लाइम कम्पनी लिमिटेड

खानों की क्षेत्र स्थिति, कार्यकलाप एवं पूंजी संरचना

कम्पनी की खानें सुंदरगढ़ जिले के बीरमित्र पुर के आसपास स्थित है। लाइमस्टोन एवं डोलामाइट का खनन और विपणन कम्पनी के मुख्य कार्यकलाप हैं। कम्पनी की प्राधिकृत एवं प्रदत्त पूंजी 50 लाख रूपए है।

निष्पादन

इस्पात बनाने की प्रौद्योगिकी में बदलाव आने से बीएसएलसी के उत्पादों की मांग में तेजी से गिरावट आई है और कम्पनी को भारी नुकसान हुआ। योजना ऋण एवं गैर योजना ऋण के रूप में भारत सरकार की वित्तीय सहायता से कम्पनी ऋणमुक्त हो गई और उत्पादन में वृद्धि करने के लिए कुछ कदम उठाए। उत्पादन मिश्र बदलने एवं गुणवत्ता में सुधार करने के लिए उपाय किए गए। इन उपायों के बावजूद, मांग में कमी एवं रेलवे छोटी लाईन से संबंधित समस्याओं के कारण, निष्पादन में बढ़ोत्तरी नहीं हो पाई। कम्पनी का निष्पादन नीचे दिया जा रहा है–

	2002-03	2003-04	2004-05 (अनंतिम) (अप्रैल–दिसंबर' 04)
उत्पादन ('000 एमटी)	982	916	585
विक्रय	2293	1990	1432
सरकार के ऋण पर ब्याज एवं क्षरण से पहले कुल लाभ	+3	(-) 303	(-) 113
शुद्ध लाभ/हानि	(-)3932	(-) 4874	(-)4309

एमओयू के साथ स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल)

पूर्वी क्षेत्र में सेल के उत्पादों का प्रेषण करने के लिए कम्पनी ने 31 अक्टूबर 2003 को सेल के साथ एक समझौता ज्ञापन किया है। इससे काफी हद तक मांग की स्थिति स्थिर होती है।

करनपुरा डेवलपमेंट कम्पनी लिमिटेड (केडीसीएल)

खानों का क्षेत्र, स्थिति, कार्यकलाप एवं पूंजी संरचना

कम्पनी की खानें झारखंड के सिरका के आसपास स्थिति हैं। यह कम्पनी सीमेंट उत्पादन के लिए उपयुक्त

चूना–पत्थर का उत्पादन करती है। इसकी प्राधिकृत एवं प्रदत्त पूंजी 40 लाख रूपए एवं 20 लाख रूपए है।

निष्पादन

कम्पनी अपने उत्पादन मुख्य रूप से झारखंड एवं बिहार राज्यों में बेचती है। इन राज्यों में सीमेंट ग्रेड के चूना–पत्थर की मांग में कुछ अधिक उतार–चढ़ाव है। इसके फलस्वरूप कम्पनी का निष्पादन प्रभावित होता है।

कम्पनी का निष्पादन नीचे दिया गया है–

(रूपए लाख में)

	2002-03	2003-04	2004-05 (अनंतिम) (अप्रैल–दिसंबर' 04)
उत्पादन ('000 एमटी)	90	73	58
विक्रय	193	184	136
सरकार के ऋण पर ब्याज एवं क्षरण से पहले कुल लाभ	+5	2	0
शुद्ध लाभ/हानि	(-)88	(-) 108	(-) 104

भावी परिदृश्य

जहाँ कम्पनी की खानें स्थित हैं, उन क्षेत्रों के सीमेंट संयंत्रों के मालिक क्लिंकर प्लांट स्थापित कर रहे हैं। आशा है कि क्लिंकर प्लांट स्थापित होने से कम्पनी के उत्पादों का प्रेषण (डिस्पैच) स्थिर हो जाएगा।

स्काट एण्ड सेक्सबाई लिमिटेड

खानों के क्षेत्र, कार्यकलाप एवं पूंजी संरचना

कम्पनी के कार्यकलाप कोलकाता में है। यह कम्पनी मुख्यतः गहरे ट्यूबवेल लगाने एवं खनिजों के गवेषण कार्य में लगी हुई हैं। कम्पनी की प्राधिकृत एवं प्रदत्त पूंजी 5 लाख रूपए है।

निष्पादन

मांगों के अभाव, पूर्ण एवं जीर्ण मशीनों तथा अधिक जन शक्ति जैसी समस्याओं के कारण कम्पनी का निष्पादन संतोषजनक नहीं है। कम्पनी का निष्पादन नीचे दिया जा रहा है–

(रूपए लाख में)

	2002-03	2003-04	2004-05 (अनंतिम) (अप्रैल–दिसंबर' 04)
विक्रय	151	157	103
सरकार के ऋण पर ब्याज एवं क्षरण से पहले कुल लाभ	(-)4	1	(-) 13
शुद्ध लाभ/हानि	488	(-) 585	(-) 531

स्कॉट एण्ड सेक्सबी लिमिटेड (एसएसएल) का पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास में योगदान

एसएसएल ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास में कुछ भूमिका अदा की है। भूमिगत जल का सदुपयोग कर आसाम के चाय बागानों के विकास में इसने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कम्पनी ने इस राज्य में चाय बागानों के लिए लगभग 600 गहरे ट्यूबवेल लगा हैं।

तत्पश्चात् कम्पनी ने अपने कार्यकलापों का विस्तार त्रिपुरा राज्य में किया है और 31.02.2004 तक राज्य में लगभग 117 गहरे ट्यूबवेल लगवाए हैं। कम्पनी को इस राज्य में और भी कार्यों के आर्डर मिले हैं। त्रिपुरा में गहरे ट्यूबवेल लगाना, सार्वजनिक स्वास्थ्य इंजीनियरिंग विभाग के ग्रामीण विकास परियोजना का एक हिस्सा है। विपरीत कानून व्यवस्था के बावजूद कम्पनी ने अपने कार्यकलापों को जारी रखा है।

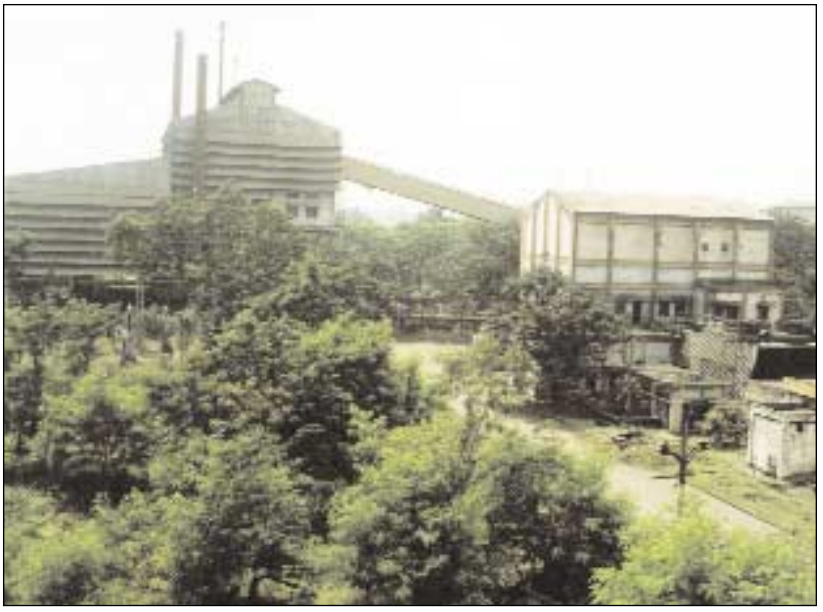

स्पॉज आयरन इंडिया लिमिटेड का संयंत्र

स्पॉज आयरन इंडिया लिमिटेड

परिचय

कम्पनी का स्पॉज आयरन संयंत्र यूएनडीपी/यूनिडो की सहयाता से प्रारम्भ में एक प्रदर्शन इकाई के रूप में 30,000 टन प्रतिवर्ष क्षमतायुक्त स्थापित किया गया था, जिसके द्वारा उत्पादित होने वाले स्पॉज आयरन (एक भाग जो फेरस स्क्रैप के बदले में इनडक्शन और इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेसस के द्वारा उपयोग किया जाता है) की तकनीकी–आर्थिक उपयोगिता ढलवॉ लोहा से और 100 प्रतिशत गैर–कोकिंग कोल से तय किया जा सके। इकाई सिंगरेनी कोलियरीज कम्पनी लिमिटेड (एसीसीएल) से प्राप्त गेर–कोकिंग कोल और लौह अयस्क जो आंध्र प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों और पड़ोसी राज्यों में उपलब्ध है पर आधारित का परिचालन नवम्बर 1980 में हुआ। रोटरी भट्टी प्रक्रिया पर आधारित स्पॉज आयरन संयंत्र में अनेकों सुधार और तब्दीली किया गया जो स्थानीय कच्चे माल और परिचालन स्थितियों के उपयुक्त हो। जिसके परिणामस्वरूप इसने सिल्ल तकनीक के विकास में ही मदद नहीं किया बल्कि देश में स्पॉज आयरन उद्योग के विकास का मार्ग भी प्रशस्त किया।

दिसंबर 2004 तक निष्पादन के महत्त्वपूर्ण बिन्दु :–

- 2004–05 के दौरान अब तक उत्पादन 42,821 टन हुआ, उत्पादन क्षमता का 95 प्रतिशत उपयोग हुआ।
- 2004–05 के दौरान 31.12.04 तक स्पॉज के प्रति टन औसत बिक्री की प्राप्ति 10520 रूपए हुई जो विगत वर्ष में इसी कालावधि के सापेक्ष 7,955 रूपए।
- 2004–05 के दौरान 31.12.04 तक बिक्री कारोबार का प्राप्ति 44.34 करोड़ रूपए हुई, जबकि विगत वर्ष में इसी कालावधि के सापेक्ष 40.60 करोड़ रूपए प्राप्त हुए।
- 31.12.04 तक परिचालन लाभ 15.12 करोड़ रूपए हुआ जोकि विगत वर्ष के इसी कालावधि के सापेक्ष (14.44 करोड़ रूपए) से 105 प्रतिशत अधिक है।
- 2004–05 के लिए पैट राशि 20 प्रतिशत के भाग पर 4.26 करोड़ रूपए (डिवीडेंड टैक्स सहित) दिए गए। 2004–05 वर्ष के लिए अंतरिम लाभ (हिस्सेदारों को लाभ) कर के रूप में 1.04 करोड़ रूपए दिया गया।

वित्त

भारत सरकार द्वारा देखें पत्र सं. 11(5)/2000–केडीएम दिनांक 28.03.2001, बकाया ऋण (योजना और गैर–योजना) को बदलने की सहमति दिए जाने पर (ऋण भारत सरकार से लिए गए थे) राशि जो 32.51 करोड़ की इक्विटी और मिश्रित ब्याज वृद्धि की राशि 36.78 करोड़ रूपए (जिसमें ब्याज दंड की राशि 13.23 करोड़ रूपए शामिल हैं) को 01.04.2000 के प्रभाव से माफ कर दिया गया। कम्पनी की अधिकृत भाग पूंजी 66.00 करोड़ रूपए थी (31.03.2004 को)। चुकता पूंजी 65.10 करोड़ रूपए थी (64.27 करोड़ रूपए भारत सरकार द्वारा रोक लिए गए और शेष बचे 0.83 करोड़ रूपए आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा) वास्तविक उपलब्धियां समझौता ज्ञापन लक्ष्य के बरक्स अधोलिखित है :–

(रूपए करोड़ में)

उल्लेखनीय	एमओयू लक्ष्य (सर्वोत्तम)	वास्तविक (अनंतिम)	प्रतिपूर्ति (प्रतिशत)
सकल लाभ	9.75	23.01	236
नकद लाभ	9.19	22.96	250
शुद्ध लाभ (पीबीटी)	5.93	20.53	346

वास्तव में 2003–04 के दौरान कमाया गया लाभ अकेले पूरे 1980 से कमाए गए लाभ के बराबर है।

उत्पादन

विगत तीन वर्षों के दौरान कम्पनी का उत्पादन और वित्तीय निष्पादन 31.12.04 तक 2004–05 के अनंतिम आंकड़ों के साथ मिलाकर नीचे तालिका में दिया गया है। समझौता ज्ञापन लक्ष्य के विरूद्ध (अति उत्तम)

	2002-03	2003-04	1.4.04 से 31.12.04 के लिए वर्ष की अनंतिम उपलब्धियां
उत्पादन			
- स्पंज लोहा (लोहा)	71,603	69,509	42,821
- विद्युत उत्पादन (लाख किलोवाट)	81	88	65
- क्षमता उपयोग (प्रतिशत) बिक्री	119	116	95
बिक्रय टन			
- स्पंज लोहा	73,943	68,072	42,150
- बिक्री कारोबार (लाख रूपए)	4,414	5,886	4,434
- आन्तरिक संसाधनों का सृजन (लाख रूपए)	970 656	2,296 2,053	1,699 1,512
- कुल लाभ (लाख रूपए) (पीबीटी)			

43,250 टन उत्पादन हुआ, वास्तविक स्पॉज आयरन उत्पादन 42,821 टन हुआ जो 31.12.04 तक लक्ष्य के 99 प्रतिशत और उत्पादन क्षमता उपयोग 95 प्रतिशत को व्यक्त करता है।

मीकॉन लिमिटेड

मीकॉन देश का प्रथम कंसल्टेंसी और इंजीनियरिंग संगठन है जिसे ISO:9001 प्राप्त है। मीकॉन की स्थापना का मूल उद्देश्य देश में इस्पात संयंत्रों की सीापना के लिए ही इंजीनियरिंग और कंसल्टेंसी सुविधाएं प्रदान करना था। समय गुजरने के साथ, यह सिर्फ इस्पात संयंत्रों की सीापना के लिए ही इंजीनियरिंग सुविधाएं प्रदान करने वाली संस्था नहीं रही अपितु धातु उपचारीय संयंत्रों जैसे अल्युमिनियम, ताँबा और जस्ता संयंत्रों की स्थापना में भी अगुआ बन गया। इसने सिर्फ कंसल्टेंसी सेवाओं में ही अपनी विश्वसनीय अनुभव का विकास नहीं किया जैसे बुनियादी अभियंत्रण, विस्तृत अभियंत्रण, परियोजना प्रबंधन के क्षेत्र में अपितु फेरस, नन–फेरस, तेल और गैस, पेट्रो–केमिकल और दूसरे सामान्य उद्योगों को डिजाइन और उपकरणों की आपूर्ति में भी अपनी भूमिका निभाई। एकीकृत इस्पात संयंत्रों के साथ अपने दीर्घ संबंध के कारण इसने मजबूत तकनीकी आधार भी तैयार किए हैं। मीकॉन ने दूसरे क्षेत्रों जैसे– भक्ति, पय्रावरणीय अभियंत्रण, सड़कों और उच्च पथ, तेल और गैस पाइप लाइन, सूचना प्रौद्योगिकी, रक्षा परियोजनाओं में भी अपनी सेवाओं का विविधीकरण कर लिया है– दोनों जैसे अभियंत्रण सेवाओं का प्रदानकर्ता साथ ही साथ एक निश्चित दिशा प्रदान करने के आधार पर परियोजनाओं को निष्पादित

केआईओसीएल ऑटोजिन्स मिल्स

करने में कमपनी का निबंधित कार्यालय, रांची, झारखंड और अभियंत्रण कार्यालय बैंगलोर और दिल्ली में है। इसके लायजन/मार्केटिंग कार्यालय मुम्बई, चेन्नई और कोलकाता में है साथ ही परियोजना कार्यालय विभिन्न स्थानों के अतिरिक्त समुद्रपारीय कार्यालय लागोस, नाइजीरिया में है।

पूंजी संरचना

कम्पनी अधिकृत हिस्सा 4 करोड़ है जिसके विरूद्ध चुकता पूंजी 2 करोड़ 42 लाख है। 2 करोड़ 42 लाख की चुकता पूंजी में 40 लाख 31 हजार रूपए बोनस हिस्से के रूप में था। (1996–97 के दौरान)

हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स कन्सट्रक्शन लिमिटेड

पृष्ठभूमि

हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स कन्सट्रक्शन लिमिटेड (एचएससीएल) की स्थापना जून 1964 में की गई थी। आरंभिक उद्देश्य सार्वजनिक क्षेत्र में एक ऐसे संगठन की स्थापना करना था जो आधुनिक एकीकृत इस्पात संयंत्रों के पूर्ण निर्माण को करने में सक्षम थे। एचएससीएल ने बोकारो इस्पात संयंत्र, विजाग इस्पात संयंत्र ओर सलेम इस्पात संयंत्र की स्थापना और चालू करने तक और भिलाई इस्पात संयंत्र, दुर्गापुर इस्पात संयंत्र, इस्को (बर्नपुर) और भद्रावती इस्पात संयंत्र के भी विस्तार और आधुनिकीकरण से जुड़ा हुआ था। इस्पात संयंत्र में निर्माण गतिविधियां कम हो जाने से कम्पनी ने दूसरे क्षेत्रों जैसे– शक्ति, कोयला, तेल और गैस में अपनी गतिविधियां तेज कर दी। इसके अतिरिक्त एचएससीएल अधः संरचना क्षेत्र जैसे सड़कें/उच्च पथों, पुलों, बांधों, जमीन के भीतर संचार और परिवहन तंत्र और औद्योगिक और टाउनशिप कम्पलेक्सेज जिसमें उच्च स्तर की योजना, समन्वय और आधुनिक परिष्कृत तकनीकों की जरूरतें होती हैं में अपना विविधीकरण कर दिया।

पूँजी संरचना

अधिकृत मात्र और चुकता भाग पूँजी दिए गए तिथि को क्रमशः 150 करोड़ रूपए और 117.10 करोड़ रूपए थी। भारत सरकार की कुल बकाया ऋण राशि दिए गए तिथि को 514.20 करोड़ रूपए (योजना

ऋण 22.50 करोड़ रूपए और गैर–योजना ऋण 491.70 करोड़ रूपए) कम्पनी ने सरकार से 222.44 करोड़ रूपए गैर–योजना सहायता के रूप में वेतन और पारिश्रमिक और नियोक्ताओं के विधिक बकाये को देने के लिए प्राप्त किया था।

निष्पादन के महत्वपूर्ण विशेषताएं

कम्पनी का वित्तीय निष्पादन 2002–03, 2003–04 और 2004–05 के दौरान अधोलिखित हैं :–

(रूपए करोड़ में)

वर्ष	2002-03	2003-04	2004-05 (अप्रैल–दिसंबर)
कारोबार	276.9	306.95	205.81
परिचालनात्मक लाभ (पीबीआईडीटी)	3.90	18.40	7.17
कुल हानि	136.35	88.50*	31.28
			(अनंतिम)

बैंकों द्वारा लिए गए ऋण पर ब्याज को भारत सरकार द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती है।
* हानि में 63.98 करोड़ रूपए शामिल है, जो वी आर में खर्च का 1/5 भाग है।

भारत रिफ्रेक्टरीज लिमिटेड

पृष्ठभूमि

भारत रिफ्रेक्टरीज लिमिटेड भारत सरकार के अधीन 22 जुलाई 1974 को स्थापित किया गया था। वर्तमान में इसके अधोलिखित चार इकाईयां है :–

i) भंडारीडाह रिफ्रेक्टरीज संयंत्र, भंडारीडाह
ii) राँची रोड रिफ्रेक्ट्रीज संयंत्र, रामगढ़
iii) भिलाई रिफ्रेक्ट्रीज संयंत्र, भिलाई और
iv) इफ्को रिफ्रेक्ट्रीज संयंत्र, रामगढ़

कम्पनी विभिन्न प्रकार के रिफ्रेक्ट्रीज के निर्माण और आपूर्ति में सिर्फ एकीकृत इस्पात संयंत्रों के लिए ही नहीं बल्कि मिनी इस्पात और मिडी इस्पात संयंत्रों के लिए भी संलग्न है।

पूँजी संरचना

31 मार्च 2004 को कम्पनी अधिकृत मांग पूँजी 246.00 लाख रूपए थी, जिसके विरूद्ध चुकता पूँजी 20879.42 लाख रूपए थी।

वित्तीय निष्पादन

2003–04 के दौरान लाभ की राशि ब्याज और क्षरण से पूर्व बीआरएल के परिप्रेक्ष्य में 786.66 लाख रूपए थी, लेकिन ब्याज, क्षरण और पूर्व अवधि समायोजन/वीआर के मद में क्रमशः 1296.76 लाख रूपए, 283.55 लाख रूपए, 39.08 लाख, 107.43 लाख रूपए देने के बाद इसे शुद्ध हानि 940.16 लाख रूपए की हुई। 2004–05 के दौरान कम्पनी ने बिना ब्याज को ध्यान में रखे जो गैर–योजना ऋण में 5500 लाख रूपए मंजूर किया गयाथा ओर विधिक बकाए की समाप्ति के पुनर्बहाली योजना के अधीन था, 183.16 लाख रूपए का शुद्ध लाभ कमाया।